

मोड्यूल 12 : जन्मतेही साँस लेने में कठिनाई : निदान तथा चूषण पंप से प्रारम्भिक उपचार

सत्र 2 : दम घुटने का उपचार : पहला कदम - चूषण पम्प का प्रयोग

दिवस : 3

समयावधि : 2 घं.

प्रयोजन

आशाओं को साँस घुटने के उपचार के पहले कदम के बारे में बताना; गले के स्राव बाहर निकालने के लिए चूषण पम्प का प्रयोग कैसे करें।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशाओं में निम्न योग्यताएँ आएँगी -

1. बताना कि दम घुटे हुए शिशु के जन्म पर उपचार के लिए क्या क्या शुरूआती कदम उठाने चाहिए।
2. स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण चूषण पम्प के प्रयोग का प्रदर्शन।

सामग्री

- विसंकमित चूषण पम्प
- बच्चे के बराबर की एक रबड़ की गुड़िया (खिलौना) जिसके नासाछिद्र और मुँह खुला हो (5 आशाओं के प्रत्येक समूह के लिये एक)।
- छोटे कप
- प्रदर्शन के लिये पानी
- अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट
- अध्ययनपत्र 2: जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम
- अध्ययनपत्र 3: चूषण पम्प का प्रयोग: जाँच-सूची

तैयारी

- उपर दी हुई सारी सामग्री तैयार रखें।
- प्रत्येक आशा के अभ्यास के लिए एक विसंकमित चूषण पम्प तथा प्रत्येक आशा को देने के लिए दो विसंकमित चूषण पम्प। प्रत्येक आशा के लिए 3 विसंकमित बिल्टा पम्प का प्रबंध किया जाए।
- छोटे समूहों में अभ्यास करने के लिए जितने समूह हों उतने कप।
- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अध्ययनपत्र 1 और अध्ययनपत्र 2 की प्रतियाँ बना लें।

प्रशिक्षण विधि

प्रस्तुति (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

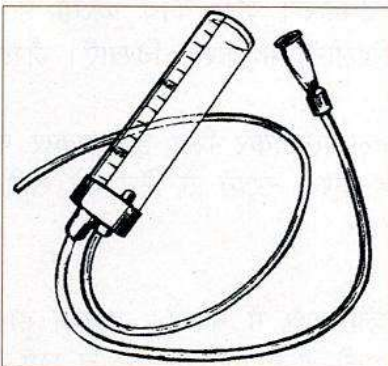
1. आशाओं से पूछें कि शिशुजन्म होते ही वे क्या करती हैं ? उनके उत्तर सुनें। वे बताएंगी कि सबसे पहला काम है बच्चे को पोंछना, सूखे और गर्म कम्बल में लपेटना। यह सही है और सभी नवजात शिशुओं की ऐसे ही देखभाल की जानी चाहिए। कई बार शिशु को केवल पोंछने से ही वह साँस लेना शुरू कर देता है और कुछ करना नहीं पड़ता।
2. आशाओं से पूछें, कि 30 सेकंड पर शिशु की जाँच करते समय वह उसमें क्या-क्या देखती हैं? (उत्तर : क्या वह रो रहा है, साँस ले रहा है और हिल-डुल रहा है)
3. पूछें कि यदि वह ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो वे क्या करती हैं ? (सामान्य देखभाल करती हैं...गर्म रखना, माँ के शरीर से लगाकर रखना, स्तनपान शुरू कराना आदि)
4. आशाओं से दम घुटने की परिभाषा बताने को कहें (पिछले सत्र में बताया गया था)। जिन्होंने सही उत्तर दिया, उनकी प्रशंसा करें और जो उन्होंने नहीं बताया, वह भी बताएँ।
5. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र 1: जन्मतेही दम घुटना: कृती चार्ट देखें।
6. आशाओं को अध्ययनपत्र 1 पढ़ने को कहें। बताएँ कि यदि झिल्ली फटने पर गाढ़ा पीला या हरे रंग का पानी बाहर आता है तो, जैसे ही शिशु का सिर बाहर आ जाएँ, पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें। शिशु का पूरा शरीर बाहर आने का इंतज़ार न करें। आशाओं ने यह प्रशिक्षण कार्यशाला 2 में सीखा है और प्रसव के समय ऐसा किया भी होगा। दम घुटे शिशु के उपचार में यह शुरूआती कदम है। नीचे विषय-वस्तु बाक्स में दिये गये कदमों की समीक्षा करें।

विषय-वस्तु

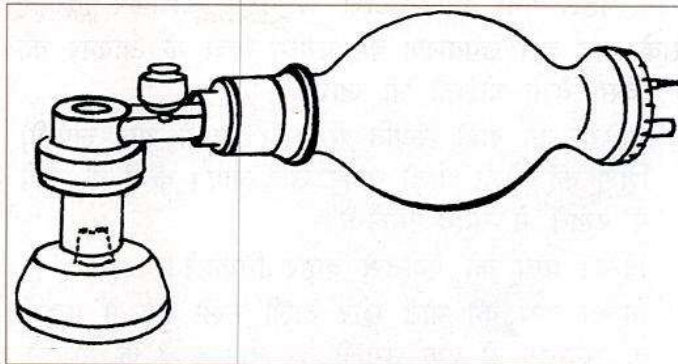
जन्मतेही दम घुटने के उपचार में शुरूआती कदम

1. झिल्ली फटने पर पानी का रंग कैसा था यह देखें या माँ से पूछें।
2. यदि पानी गाढ़ा पीला या हरा हो तो जैसे ही शिशु का सिर दिखने लगे (पूरा शिशु बाहर आने से पहले) वैसेही पट्टी वाले कपड़े से शिशु का मुँह अंदर से साफ करें।
3. शिशु पैदा होते ही जन्म का समय नोट करें और समय की गिनती आरंभ करें।
4. जन्मतेही शिशु रोता नहीं, साँस नहीं लेता, धीमे साँस लेता है या हॉफता है – जन्मतेही दम घुटने के बारे में निर्णय करें।
5. शिशु को पोंछें
6. शिशु को कपड़े से ढँके।
7. बताएँ कि यदि शिशु रो नहीं रहा, साँस नहीं ले रहा, हल्की साँस ले रहा है या हॉफ रहा है तो इसका अर्थ है कि उसका दम घुट रहा है और उसे उपचार की आवश्यकता है। उपचार को पुनरुज्जीवन (कृत्रिम साँस दिलाना) कहते हैं।

चूषण पम्प तथा बैग और मास्क का चित्र



चूषण पम्प



बैग और मास्क

8. पुनरुज्जीवन की प्रक्रिया बताएँ:

1. **पोंछना तथा लपेटना** : बताएँ कि जन्मते ही शिशु को शीघ्रता से कपड़े से पोंछ लेना तथा सूखे कपड़े में लपेटना चाहिए। कभी-कभी ऐसा करने से वह रोने और साँस लेने लगता है।
2. **चूषण पम्प का प्रयोग** : यदि शिशु पोंछने और लपेटने से भी रोए नहीं, तो उसकी साँस की घुटन दूर करने के लिए दूसरा कदम है, उसके मुँह, गले और नाक के स्रावों को साफ करना, जिससे कि वह अच्छी तरह साँस ले सके। इसके लिए चूषण पम्प का प्रयोग किया जाता है। शिशु का मुँह साफ किया जाता है और यदि वह तब भी रोता तथा साँस नहीं लेता, तो उसका गला और नाक साफ किए जाते हैं।
3. **चूषण पम्प के प्रयोग के पहले नाल नही काटनी चाहिए** (पर यदि नाल छोटी है और पर्याप्त जगह नहीं है तो नाल पहले काटी जा सकती है)। यदि शिशुजन्म चारपाई पर कराया जा रहा हो, तो शिशु को नीचे ज़मीन पर लिटाना ठीक रहता है, जिससे कि उसकी नाल से खून बच्चे के शरीर में आता रहे। यदि जन्म ज़मीन पर कराया जा रहा हो तो शिशु को ज़मीन पर माँ के दाईं ओर माँ की तरफ सिर करके लिटाया जाना चाहिए।
4. **बैग और मास्क** : यदि स्राव निकालने वाले उपकरण की मदद से भी शिशु रोता नहीं और साँस नहीं लेता, तो तुरंत बैग और मास्क का प्रयोग करें। दम घुटने के उपचार में यह दूसरा कदम है और इसके बारे में अगली प्रशिक्षण कार्यशाला में बताया जाएगा।

8. आशाओं को याद दिलाएँ :

- यदि शिशु ठीक से रो रहा है और साँस ले रहा है तो स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग न करें।
- शिशु को ढँकना और गर्म रखना आवश्यक है।
- जैसे ही शिशु रोना/साँस लेना शुरू कर दे, स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग बंद कर दें।

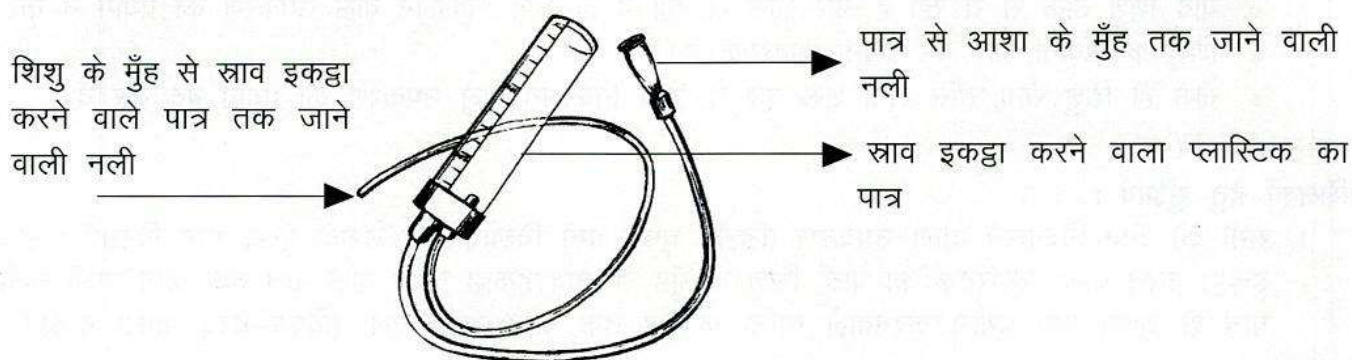
प्रदर्शन (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

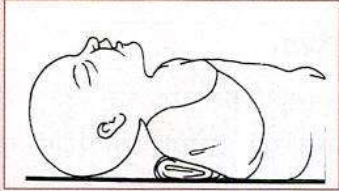
1. सभी को स्राव निकालने वाला उपकरण (डिली) चूषण पम्प दिखाएँ और उसके मुख्य भाग दिखाएँ : स्राव इकट्ठा करने वाला प्लास्टिक का पात्र, शिशु के मुँह से स्राव इकट्ठा करने वाले पात्र तक जाने वाली नली, पात्र से चूषण पम्प प्रयोग करनेवाले व्यक्ति के मुँह तक जाने वाली नली (विषय-वस्तु बाक्स देखें)।

2. आशाओं से कहें कि वे अध्ययनपत्र से स्राव निकालने वाले उपकरण वाली जाँच-सूची देखें।
3. सबसे पहले एक कप/कटोरी से पानी खींचकर दिखाएँ कि यह उपकरण कैसे कार्य करता है।
4. इसके बाद इस उपकरण का प्रयोग बच्चे के आकार की गुड़िया (खिलौने) में करके दिखाएँ। जैसा-जैसा करें वैसा वैसा बोलती भी जाएँ।
 - 1) गुड़िया को सही स्थिति में रखें; (सूखी और लपेटी) पीठ के बल लिटाकर सिर इस प्रकार रखें कि शिशु की ठोड़ी थोड़ी ऊपर उठ जाए। कंधों के नीचे कपड़ा तह करके रखने से सिर को सही स्थिति में रखने में मदद मिलेगी।
 - 2) बिल्टा पम्प को पॉकेटसे बाहर निकालें।
 - 3) बिल्टा पम्प की मोटे छोर वाली नली मुँह में पकड़ें। दूसरी नली हाथ में पकड़ें। आपका हाथ नली के अग्रभाग से एक उंगली दूर हो। बच्चे के मुँह में दी जाने वाली नली को हाथ से न छुएँ, जिससे संक्रमण होने का खतरा नहीं होगा। बच्चे के मुँह में देते समय, नली को थोड़ा दूर से पकड़ें।
 - 4) करीब आधी उंगली लंबी नली शिशु के मुँह में रखें, और उसे मुँह में सब तरफ घुमाते हुए दूसरी नलीसे कुछ सेकंड चूषण करें। यदि शिशु रोता है और सामान्य तौर से साँस लेना शुरू करता है तो रुक जाएँ। यदि नहीं तो अगला कदम उठाएँ। बताएँ कि इस उपकरण का प्रयोग शीघ्रता से जन्म के तुरंत बाद (30 से. के अंदर) करना चाहिए।
 - 5) यदि मुँह से चूषण के बावजूद भी शिशु साँस नहीं ले पा रहा, तो गले से चूषण करें। गले से चूषण करते समय ज़्यादा से ज़्यादा एक उंगली तक की ट्यूब की लंबाई बच्चे के गले तक जाए और दूसरी ट्यूबसे चूषण करें। यदि शिशु रोने लगता है और सामान्य रूप से साँस लेना शुरू करता है, तो रुक जाएँ।
 - 6) यदि शिशु अभी भी ठीक से साँस नहीं ले पा रहा हो, तो एक एक करके दोनों नासिकाओं से चूषण करें। यदि माँ की योनि से हरे रंग का द्रव निकला था, या शिशु के मुँह से अधिक स्राव निकल रहा हो, तो स्राव अच्छी तरह निकालें। चूषण जल्दी जल्दी 15-20 सेकंड में कर लेना चाहिए।
 - 7) यदि चूषण के बाद भी शिशु साँस नहीं ले रहा हो तो **तुरंत अगली कार्यवाही करें** : शिशु को कृत्रिम साँस दिलाने के लिए (फेफड़ों में हवा भेजने के लिए) बैग और मास्क का प्रयोग करें। यदि ऐसा समय से न किया गया, तो शिशु के मस्तिष्क में विकृति हो सकती है, या वह मर भी सकता है। (बैग और मास्क का प्रयोग अगली कार्यशाला में बताया जाएगा) स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का प्रयोग केवल एक ही बार करके उसे फेंक देना चाहिए।

स्राव बाहर निकालने वाले उपकरण का चित्र:



चूषण पम्प का प्रयोग: जाँच-सूची

1. शिशु को सही स्थिति में रखें, पोंछे, कपड़े में लपेटे और कपड़ा तह करके कंधों के नीचे रख दें। ठोड़ी उपर उठी हो और सिर थोड़ा पीछे की ओर।	
2. विसंक्रमित किए हुए उपकरण को खोल से बाहर निकालें।	
3. मुँह वाली नली का मोटा छोर अपने मुँह में रखें। दूसरी नली को उसके खुले भाग से एक अंगुल दूर पकड़ें।	
4. दूसरी नली का खुला भाग आधा अंगुल शिशु के मुँह में डालें और मुँह के स्रावों को निकालने के लिए कुछ देर तक मुँह के अंदर धुमाते हुए चूषण करें। यदि शिशु रोने लगे और ठीक से साँस लेने लगे, तो रुक जाएँ। यदि अभी भी न रोए/साँस न ले, तो अगला कदम उठाएँ।	
5. लगभग एक अंगुल नली को शिशु के गले में डालें और धीरे से गले के स्रावों का चूषण करें। यदि शिशु रोने/साँस लेने लगे, तो रुक जाएँ अन्यथा अगला कदम उठाएँ।	
6. शिशु के गले और मुँह से नली निकाल लें, उसका खुला सिरा उसके एक नासिका छिद्र में डालें और धीरे से चूषण करें। इसी तरह दूसरी तरफ की नासिका छिद्र से चूषण करें।	
7. जब सारा स्राव निकाल चुकें तो इस उपकरण को फेंक दें। (इसे दुबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए)	

प्रशिक्षणार्थियों हेतु अभ्यास (45 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. आशाओं को 3-3 के समूहों में बाँटें।
2. प्रत्येक आशा को पानी के कप का प्रयोग करते हुए स्राव निकालने वाले उपकरण का प्रयोग करने का अभ्यास कराएँ।
3. जब वे प्रयोग करना सीख जाएँ, तो शिशु के आकार की गुड़िया का प्रयोग करते हुए उन्हें अभ्यास कराएँ, जबकि अन्य सभी आशाएँ जाँच सूची का प्रयोग करके निरीक्षण करती जाएँ।
4. आशाओं को अभ्यास करने के लिए पर्याप्त समय दें, ताकि उन्हें उपकरण के प्रयोग में कुशलता प्राप्त हो जाए। इसके बाद इन्हें इस उपकरण का प्रयोग शीघ्रतापूर्वक अर्थात् - 30 से. के अन्दर, करने का अभ्यास कराएँ।
5. प्रशिक्षक कमरे में घूमती रहें। सभी की मदद करती रहें और उनकी योग्यता की जाँच भी करती रहें।

सारांश : (15 मि.)

- किसी एक आशा से पूछें, कि यदि शिशु का दम घुट रहा हो, तो क्या करना चाहिए।
- दूसरी आशा से स्राव निकालने वाले उपकरण के प्रयोग का प्रदर्शन करने को कहें, जबकि अन्य सभी जाँच-सूची का प्रयोग करते हुए निरीक्षण करती रहें।
- कुछ गलतियाँ हों, तो सुधारें और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए प्रशंसा करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
बताना कि दम घुटे हुए शिशु के जन्म पर उपचार के लिए क्या क्या शुरूआती कदम उठाने चाहिए।	जन्मतेही दम घुटना : कृती चार्ट पर चर्चा	—
स्त्राव बाहर निकालने वाले उपकरण चूषण पम्प के प्रयोग का प्रदर्शन।	किए जा रहे प्रदर्शन को जाँच-सूची की मदद से देखना। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी चूषण पम्प सही तरीके से प्रयोग करने का प्रदर्शन करेगा।	जाँच-सूची की मदद से प्रशिक्षक द्वारा अवलोकन